शुल्क १५ वर्ष
२१००/- रुपये

# foKfIr

एक प्रति ८/- रुपये
वार्षिक २५०/- रुपये

rjkiFk dh dUnh; xfrfofèk;ka dk lokfèkd ykdfi; lkIrkfgd e[ki=

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष १८ : अंक १ : नई दिल्ली : ८-१४ अप्रेल २०१२

परम पावन आचार्यश्री महाश्रमण आदि श्रमण तथा महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी आदि श्रमणी जसोल की ओर विहार करते हुए पाली पधार गए हैं। सकल समाज की ओर से पूज्यप्रवर का भव्य स्वागत हुआ है। आचार्यवर यहां पांच दिन विराजेंगे। १७ अप्रेल को सिवाना में सिवांची-मालाणी क्षेत्र की ओर से स्वागत समारोह का आयोजन होगा। ३० अप्रेल को बालोतरा में आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव का विराट आयोजन होगा, जिसमें बड़ी संख्या में देश भर से समागत श्रद्धालु भाग लेंगे।

## ije J); vkpk;iojdk exy mnckèku

(गतांक से आगे)

‘तेरापंथ शासन की अपनी संगठनपरक मर्यादाएं हैं, जो बहुत महत्त्वपूर्ण हैं। उनमें एक है--सर्व साधु-साध्वियां एक आचार्य की आज्ञा में रहें। एक आचार्य की आज्ञा में चलें। यह आचार्यों के प्रति समर्पण है, शासन के प्रति समर्पण है। हम शासन के प्रति निष्ठा रखें। शासन पहले है, व्यक्ति बाद में है। मुनि जिनेशकुमारजी बैठे हैं। बचपन में गुरुदेव ने इन्हें एक सिंघाड़े के साथ भेजा था। एक समय आया, जब इनके सिवाय उस सिंघाड़े के सभी साधु धर्मसंघ से अलग हो गए। मुनि जिनेशजी ने उस समय जिस संघनिष्ठा का परिचय दिया था, उसका भाव यह था कि मेरे लिए संघ और शासन पहले है। दो सिंघाड़ों को मिला कर कुल पांच साधु अलग हो गए थे। मुनि जिनेशजी ने शासन और संघपति के प्रति अपनी निष्ठा को अक्षुण्ण रखा। छोटी वय में कितनी बड़ी संघनिष्ठा का परिचय दिया था। ऐसी शासननिष्ठा को क्या हम भूल सकते हैं ? इतिहास में ऐसे अनेक प्रसंग मिलते हैं, जब कठिन समय में साधु-साध्वियों ने दृढ़ शासननिष्ठा का परिचय दिया, संघ और संघपति को शरणदाता, त्राणदाता व उद्धारकर्ता माना और अपनी आस्था को अविचल बनाए रखा।

छोटी-छोटी तुच्छ बातों के लिए न तो हमारी संघनिष्ठा प्रभावित होनी चाहिए, न ही मन में किसी प्रकार की कमजोरी आनी चाहिए। पदलिप्सा के कारण या व्यवस्था संबंधी किसी बात को लेकर मन में किसी प्रकार का अन्यथा भाव नहीं आना चाहिए। हर स्थिति और परिस्थिति में हमारी भावना स्थिर और अडोल रहे, हम शासन में रचे-पचे रहें। जयाचार्य ने लिखा है--

**unu ou fHk{k x.k e cIk jh**
**g th] ik.k tk; rk Hkh ix e f[kIkjh Ï**

भिक्षु शासन को नंदनवन कहा गया है। हम इसमें रमे रहें। गणपति या आचार्य कभी कुपित भी हो सकते हैं, कड़ी बात कह सकते हैं, लाल आंख दिखा सकते हैं और भरी परिषद् में खड़ा कर उलाहना भी दे सकते हैं। लेकिन ऐसी स्थिति में मन कमजोर न हो। गुरु अमृत का प्याला पिला रहे हैं, ऐसी भावना मन में रहे। बड़े विनय भाव से हम उनके उपालंभ को स्वीकार करें। जीना है तो संघ में और सौ वर्ष बाद मरना है तो संघ में, यह हमारी भावना रहे। छोटी-मोटी बातों को लेकर अस्थिरता का भाव मन में न आए। आचार्य का जो भी आदेश-निर्देश मिले, उसके अनुसार चलें। अपनी भावना निवेदित कर सकते हैं, किन्तु अन्तिम आदेश की अनुपालना का प्रयास रहना चाहिए। मैं बहिर्विहारी साधु-साध्वियों के सूचना

www.jvbharati.org

पत्रों को पढ़ता हूं और खास कर इन महीनों में देखा तो पाया कि अपनी अपेक्षा को निवेदन करने के बाद उनकी ओर से कहा गया कि यह हमारी अपेक्षा है, लेकिन इसके बाद जैसी आपकी मर्जी, जैसा आपका चिंतन और जैसा आपका आदेश। ऐसी बातों में उनका कितना समर्पण झलकता है। यह हमारे संघ के लिए कोई बड़ी बात नहीं है, क्योंकि हमारा संघ श्रद्धा, निष्ठा, समर्पण और अनुशासन की बुनियाद पर खड़ा है। हमारे यहां प्रारंभ से ही ऐसे संस्कार दिए जाते हैं कि ननुनच की कोई बात ही नहीं। आचार्य की आज्ञा हर साधु-साध्वी के लिए रक्षा-कवच है। अपने मन से काम करना बड़ी बात नहीं, बड़ी बात है गुरु के मन से काम करना, गुरु की इच्छा को महत्त्व देकर काम करना।

केवल साधु-साध्वियों के लिए नहीं, श्रावक-श्राविकाओं के लिए भी एक सीमा तक यही बात, यही नियम है। आध्यात्मिक संदर्भों में गुरु की आज्ञा को, गुरु के इंगित को महत्त्व दें। श्रावक समाज के संदर्भ में हम गौरव कर सकते हैं कि हमारे पूर्वजों ने कैसे संस्कार भरे, जो आज हमारे काम आ रहे हैं। आचार्य के इंगित और इच्छा के प्रति हमारे मन में जो सम्मान का भाव है, वह संस्कारगत है, वह हमारे रक्त में है। पूर्व, पश्चिम, उत्तर या दक्षिण--देश के किसी भी कोने में रहें, हमेशा गुरु इंगित के प्रति सजगता रहे कि गुरु का इंगित क्या है ? जो काम हम करने जा रहे हैं, उस पर आचार्यश्री क्या सोचते हैं ? श्रावकों का यह चिंतन कभी-कभी हमें ज्ञात होता है तो गौरव की अनुभूति होती है। मैं चाहता हूं कि समर्पण का यह भाव इससे और ज्यादा, और आगे वृद्धिंगत होता रहे।

साधु-साध्वियां विहार, चतुर्मास आचार्य की आज्ञा से करें। कोई अपना शिष्य-शिष्या न बनाएं। सब शिष्य-शिष्याएं एक आचार्य के हैं, किसी के निजी या व्यक्तिगत नहीं। आचार्य योग्य व्यक्ति को दीक्षा दें। दीक्षित करने के बाद भी कोई अयोग्य निकले तो उसे गण से अलग कर दें। आचार्य के निर्देश से कोई साधु-साध्वी किसी को दीक्षित करे तो आचार्य के नाम से करे और यथासमय यथाअवसर उसे आचार्य के चरणों में समर्पित करे। मुझे वह दोहा अभी तक याद है जो मुझे और मुनिश्री उदितकुमारजी को दीक्षित करते समय श्रद्धेय मंत्री मुनिश्री सुमेरमलजी 'लाडनूं' ने अपने वक्तव्य में उच्चारित किया था--

**t lenf'V thoMk] dj dVEc ifjikyA**
**vUrj fny U;kjk jg] T; èkk; jeko cky Ï**

आपने जो दोहा फरमाया, उसका भाव यह है कि दीक्षा जरूर दे रहा हूं, लेकिन ये चेले तो आचार्य तुलसी के ही होंगे। मैं तो धाय माता के समान हूं। इनकी सेवा करना मेरा काम है, संपत्ति तो ये आचार्य तुलसी की हैं। मुनि जिनेशजी ने अपनी दक्षिण यात्रा में गुरुदेव महाप्रज्ञजी की अनुज्ञा से दीक्षा दी और मुनि सुबोध को लाकर मुझे सौंप दिया यह कहकर कि मैं स्वयं और आपका यह नवदीक्षित मुनि हाजिर है, जहां रखाएं, वहां रहने का भाव है।' मैंने स्वीकार किया और कहा--'नवदीक्षित मुनि का आहार हमारे पास होगा।' यह हमारे संघ की परंपरा है कि सौंप देने के बाद हम जहां चाहें, जिनके साथ चाहें, नवदीक्षित को भेज सकते हैं। मुनि सुबोध को सौंप देने के बाद अब इन पर जिनेशजी का कोई अधिकार नहीं है। अधिकार अब हमारे पास है। अब प्रसंग आ ही गया तो मुनि सुबोध किसके पास रहेंगे ? इस प्रश्न को भी समाहित कर देता हूं। मुनि सुबोधकुमार मुनि जिनेशजी के पास रहने की वंदना करें और मुनि जिनेशकुमारजी इस बार का चौमासा हमारे साथ जसोल में करें।' (दोनों मुनियों ने आचार्यवर के आदेश को शिरोधार्य कर वंदना की)

यही बात साध्वियों पर भी लागू होती है। किस साध्वी को कहां और किसके पास रखना है, यह आचार्य के हाथ में होता है। किसी के पास भेज दें, या किसी से वापिस ले लें, यह आचार्य का विशेषाधिकार होता है। कई बार ऐसा होता है कि हम किसी सिंघाड़े को कोई साधु अथवा साध्वी देते हैं और अपेक्षावश कभी वापस भी ले लेते हैं। यह आचार्य का अपना निर्णय और अधिकार है।

उत्तराधिकारी किसे बनाना, यह भी आचार्य का अपना अधिकार है। अपने चिंतन से जिसे भी वे ठीक समझें, उत्तराधिकारी बना सकते हैं और आचार्य जिसे अपना उत्तराधिकारी बनाएं, उसे सब साधु-साध्वियां सहर्ष स्वीकार करें, यह विधान है। छोटे को बनाएं या बड़े को बनाएं, यह भी आचार्य के हाथ में। परमपूज्य कालूगणी ने एक बाईस वर्ष के युवा मुनि को अपना उत्तराधिकारी बनाया तो युवाचार्य तुलसी को संघ ने स्वीकार किया और गुरुदेव तुलसी ने एक प्रौढ़ मुनि नथमलजी (आचार्य महाप्रज्ञजी) को अपना उत्तराधिकारी बनाया तो चतुर्विध धर्मसंघ ने उन्हें भी सहर्ष स्वीकार किया। यह हमारे संघ की सामान्य विधि है कि गुरु द्वारा निर्णीत और मनोनीत बात को अंतिम माना जाता है।

इस प्रकार संगठन का अपना महत्त्व है और संगठन के लिए बनी हुई मर्यादाओं का भी अपना महत्त्व होता है। आचार्य भिक्षु ने तेरापंथ धर्मसंघ की स्थापना की। वे श्रुत आराधक, विशिष्ट ज्ञानी और दृढ़मनोबली साधु थे। आगमों का उन्होंने गहराई से मंथन किया और संघ के लिए जो मर्यादाएं बनाईं, उनकी भित्ति पर ही तेरापंथ का प्रासाद खड़ा हुआ। उनके उत्तरवर्ती आचार्यों ने अपने आद्य प्रवर्तक द्वारा दिखाए गए मार्ग पर चलते हुए संघ की सुव्यवस्था की। आचार्यों की इस कड़ी में हमने गुरुदेव तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ को देखा। उनके चरणों में, उनके साये में हमें रहने का सौभाग्य मिला। उन्होंने संघ के कार्यों में मुझे संपृक्त किया और शासन की श्रीवृद्धि की। ऐसे महान् आचार्यों का शासन पर उपकार है। हम अपनी साधना को आगे बढ़ाते हुए धर्मशासन की यथोचित सेवा करने का प्रयास करें।'

□

# ije J); vkpk;Jh egkJe.k tlky dh vkj

## jg lnk vkun e

**„^ ekpA** सिरियारी के त्रिदिवसीय प्रवास के पश्चात् महाप्रज्ञ भवन से विहार कर परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर आचार्य भिक्षु समाधि स्थल पर पधारे और वहां ध्यान किया। कुछ क्षणों के बाद तत्काल एक पद्य की रचना करते हुए आचार्यवर ने कहा--

**Lokehth dèkke ij] fd;k tjk&lk è;kuA**
**jg lnk vkun e] èkel?k vEyku Ï**

समाधि स्थल से प्रस्थान कर लगभग एक किमी. चलने के बाद सड़क के बायीं ओर एक विशाल वटवृक्ष आया। यह वही वटवृक्ष है, जिसके नीचे आचार्य भिक्षु ने शासनमहास्तंभ मुनि हेमराजजी स्वामी को वि.सं. १८५३ की माघ शुक्ला त्रयोदशी को दीक्षा प्रदान की थी। इसी के साथ तेरापंथ के विकास का दौर शुरू हुआ। उस स्थान पर आचार्यवर ने कुछ क्षण तक ध्यान किया और एक पद्य की रचना की। पद्य इस प्रकार है--

**rjkiFk fodkl dk] fd;k idke i;RuA**
**'kklu e nhf{kr g,] gejkt x.kjRu Ï**

पूज्यप्रवर मार्ग में स्थित शक्तिधाम पर पधारे। वहां साधिका संतोषकंवर को आचार्यवर ने कषायमुक्ति की प्रेरणा दी। उसके बाद वोपारी गांव में पधारने पर गांववासियों ने पूज्यप्रवर का भावभीना स्वागत किया। वहां श्री मांगीलाल रांका एवं श्री गौतमचन्द छाजेड़ ने सपत्नीक आजीवन शीलव्रत स्वीकार किया।

## lkjHkr g lR;

सिरियारी से आज लगभग तेरह किमी. का विहार कर आचार्यप्रवर ने मांडा गांव में प्रवेश किया

और एक व्यवस्थित जुलूस के साथ श्री प्यारेलाल पीतलिया के आवास पर पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ। राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय परिसर में आयोजित कार्यक्रम में महिला मंडल, कन्यामंडल व स्कूली बच्चों ने गीत प्रस्तुत किया। तेरापंथ विद्यालय चेन्नई व गणाधिपति तुलसी इंजीनियरिंग कॉलेज बेल्लूर के चेयरमैन श्री प्यारेलाल पीतलिया ने स्वागत भाषण किया। स्थानीय सरपंच श्री टीकमचन्द मेघवाल के वक्तव्य के बाद नीम्बली निवासी बेंगलुरु प्रवासी श्री बी. नवनीत मूथा ने अपने विचार प्रस्तुति के बाद नीम्बली गांव की ओर से अभिनंदन पत्र श्रीचरणों में समर्पित किया। राजस्थान के पूर्व खान मंत्री श्री लक्ष्मीनारायण दवे एवं सिरियारी रावले के ठाकुर दिलीपसिंहजी राठौड़ ने अपने वक्तव्य में आचार्यवर की अहिंसा यात्रा को जन-जन के लिए उपयोगी बताया। जिलाप्रमुख श्री खुशवीरसिंह एवं डॉ. शर्मा (सिरियारी) ने अपने विचार रखे।

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी ने अपने अभिभाषण में मांडा की साध्वी गंगाजी की विशिष्टता व गंगाशहर में तेरापंथ की श्रद्धा को मजबूत बनाने में रही उनकी विशेष भूमिका का उल्लेख किया। महाश्रमणीजी ने कहा--'आचार्यवर का मांडा में आगमन हुआ है। आपके प्रवास, दर्शन, प्रवचन श्रवण व सामीप्य से ऊर्जा प्राप्त करें, जिससे जीवन का विकास हो सके। वस्तुतः महापुरुषों से ज्ञान लेने से व्यक्ति चक्षुष्मान् बनता है, जीवन की दिशा बदलती है।'

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'दुनिया में सारभूत तत्त्व क्या है, इस संदर्भ में अनेक उत्तर प्राप्त हो सकते हैं। कई लोग इस असार संसार में भोग को सारभूत मानते हैं तो आर्थिक दृष्टिकोण वाले लोग धनार्जन को, जुआरी द्यूतक्रीड़ा को तथा ईमानदार व्यक्ति सत्य-सेवन को सारभूत मानते हैं। इस परिप्रेक्ष्य में आगम का कथन है--'सत्य लोक में सारभूत है।' दुनिया में झूठ चलता है तो सचाई भी जीवित है। समाज में ईमानदारी प्रतिष्ठित हो तो इससे सामाजिक व्यवस्थाएं समीचीन रह सकती हैं। वे लोग धन्य हैं, जिन्हें झूठ से घृणा है। व्यक्ति क्रोध, लोभ, भय व हास्यवश झूठ बोलता है। जीवन में आध्यात्मिक साधना एवं नैतिकता की आराधना चले। परमपूज्य गुरुदेव तुलसी ने अणुव्रत के माध्यम से नैतिकता का सन्देश दिया। सत्य के अनुपालन से अनेकानेक गुण जीवन में अवतरित हो सकते हैं।'

मांडा क्षेत्र की चर्चा करते हुए आचार्यवर ने कहा--'मांडा क्षेत्र में आचार्य भिक्षु का पदार्पण व प्रवास हुआ। उनके समय के आसोजी श्रावक की नींद वाली घटना भी यहीं से संबंधित है। यहां की साध्वी गंगाजी ने गंगाशहर क्षेत्र के निर्माण में श्रम किया। ऋषिराय काल से कालूगणी तक छह आचार्यों व आठ आचार्यों के शासनकाल के साधु-साध्वियों को देखने वाली साध्वी कस्तूरांजी यहीं की थीं। यहां की साध्वी केसरजी प्रतिभासंपन्न थीं। मांडा के तपस्वी मुनि भीमजी स्वामी ने तेरह वर्ष तक तेले-तेले चौविहार तप किया। पूज्य माणकगणी के महाप्रयाण के बाद आज्ञा-आलोयणा इनके जिम्मे रहा। मुनि छजमलजी ने पत्नी, बहन व पुत्री के साथ दीक्षा ली। इन सबका उनकी भूमि पर मैं स्मरण करता हूं। यहां के सोहनलालजी कटारिया उपासक हुए हैं। प्यारेलालजी आदि श्रावक भक्ति-भावना रखने वाले श्रावक हैं। सबमें श्रद्धा भावना वृद्धिंगत होती रहे।'

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया। रात्रि में पारिवारिक सेवा व प्रेरणा-पाथेय का क्रम चला। सामान्यतया यहां एक-दो घर खुले रहते हैं। आचार्यवर के पदार्पण के अवसर पर लगभग पचीस घर खुले। यहां के सभी श्रावक दक्षिण प्रवासी हैं। पूरे गांव में हर्ष और उमंग का वातावरण था।

## ti fHk{k dk uke

**„% ekpA** मांडा के घरों में चरण स्पर्श के बाद विहार करते हुए आचार्यवर मार्गवर्ती शेखावास गांव में पधारे। श्री प्रेमराज सुराणा, श्री हेमराज सुन्देचा, सरपंच श्री गोपालसिंह शेखावत ने पूज्यवर का स्वागत किया। यहां के बीस जैन परिवारों में पांच घर खुले। सनलाइट पब्लिक स्कूल के बच्चों व गांववासियों के

बीच पूज्यवर का संक्षिप्त उद्‌बोधन हुआ। मार्ग में बेरान बोड़ा सरगरों का तथा पीपलिया की ढाणी स्थित प्राथमिक विद्यालयों के बच्चों को पूज्यप्रवर ने प्रेरणा दी। आज मांडा से लगभग बारह किमी. का विहार हुआ। कंटालिया के पास ग्रामीणों की प्रबल प्रार्थना पर आचार्यवर मार्ग से लगभग आधा किमी. भीतर श्रीनाथ गोपाल गोशाला पधारे। गोशाला के प्रवेश द्वार पर चींटियों के कारण पूज्यवर का अन्दर पधारना नहीं हो सका, बाहर से ही आपने मंगलपाठ सुनाया।

कंटालिया प्रवेश पर श्री हस्तीमल जुगराज गादिया की स्मृति में उनके परिजनों द्वारा निर्मित 'आचार्य भिक्षु प्रवेश द्वार' का पूज्यवर के मंगलपाठ श्रवण के साथ लोकार्पण हुआ। कंकुबाई जेवंतराज मरलेचा राजकीय आयुर्वेदिक औषधालय में चरण स्पर्श के बाद आचार्यवर ने एक भव्य जुलूस के साथ नगर में प्रवेश किया। वहां भिक्षु कल्याण केन्द्र में आपका प्रवास हुआ। पूज्यप्रवर प्रवास स्थल के ठीक सामने स्थित आचार्य भिक्षु जन्मस्थल पर पधारे। कहते हैं इसी स्थान पर आचार्य भिक्षु का जन्म हुआ। जन्मस्थल पर जन्म की पूरी झांकी चित्रित की गई है तथा इतिहास से संबंधित अन्य अवगति भी दीवारों पर उल्लिखित है। आचार्यवर ने जन्मस्थल पर कुछ क्षण तक ध्यान किया, तत्पश्चात् एक स्वरचित पद्य फरमाया--

**tUeLFky x# fHk{k dk] 'kHk dVkfy; xkeA**
**rUe; cu vkReLFk gk] t i fHk{k dk uke Ï**

पद्य रचना के बाद तीन बार '**ऊं भिक्षु**' का सस्वर उच्चारण करते हुए आचार्यवर ने वहां से प्रस्थान किया और प्रवचन स्थल पर पधारे।

## nfu;k dk fn;k dVkfy;k u ,d fn0; egki#"k

रावले के मुख्य चौक में आयोजित कार्यक्रम में महिला मंडल की बहनों ने एवं श्री मदनलाल मरलेचा ने गीत प्रस्तुत किया। एम. गौतम सेठिया, श्री जे. गौतम सेठिया, अ. भा. तेयुप के पूर्व अध्यक्ष श्री गौतम डागा ने पूज्यवर के स्वागत में अपने विचार व्यक्त किए। श्री मोहनलाल पोरवाल ने संकल्प पत्र भेंट किए। आचार्य भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी समारोह वि. सं. २०८३-८४ वर्ष (सन् २०२५) में कंटालिया चतुर्मास हेतु गांववासियों की ओर से श्री गणपत डागा ने आकर्षक प्रार्थना पत्र पूज्यप्रवर को अर्पित किया। साध्वी चन्द्रिकाश्रीजी ने अपनी पैतृकभूमि की ओर से अपने उद्‌गार व्यक्त किए।

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी ने अपने अभिभाषण में कहा--'कंटालिया तेरापंथ का ऐतिहासिक क्षेत्र है। आचार्य भिक्षु बचपन से ही कुछ विलक्षणताओं को लेकर अवतरित हुए। वे प्रबंधन विशेषज्ञ थे और हर काम पूरी प्लानिंग से करते थे। विवाह के कुछ समय बाद पति-पत्नी दोनों ने प्लानिंग के अनुसार साधनामय जीवन जीना शुरू कर दिया। अनजाने बीहड़ पथ पर चलना, जहां मार्ग नहीं वहां पगडंडी बनाना और पगडंडी के स्थान पर राजपथ बनाना महत्त्वपूर्ण है। उन्होंने राजपथ बनाया और उस पर चलते हुए उन्होंने अनगिनत कष्ट सहे, किन्तु अविचल बने रहे। उन्हीं के पदचिह्नों पर चलते हुए आचार्यश्री महाश्रमण जनोत्थान का कार्य कर रहे हैं।'

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'आचार्य भिक्षु आचारनिष्ठ क्रान्तिकारी महापुरुष थे। उन्होंने संगठन की मजबूती हेतु लक्ष्यबद्ध प्रयास किया। अब तो यह संगठन राजमार्ग बना हुआ है। इस अढाई सदी में संस्कार इतने परिपक्व हो गए कि कई बातें सहज सुगम हो गई हैं। अपने शिष्य-शिष्याएं न बनाना उस समय की स्थितियों में कठिन बात थी, पर अब यह सामान्य व्यवस्था बन गई है। संघ की सुव्यवस्था और मजबूती में सभी आचार्यों का योगदान रहा है।'

आचार्यवर ने आगे कहा--'आचार्य भिक्षु के साथ उनकी पूर्वजन्म की साधना का योग था, ऐसा प्रतीत होता है। वे बचपन से ही चतुर, प्रखर मेधासंपन्न तथा औत्पत्तिकी बुद्धि के धनी थे। आचार्य भिक्षु तेरापंथ

धर्मसंघ के संस्थापक हैं, पिता हैं, जनक हैं। जो जनक होता है, वह वैशिष्ट्यपूर्ण होता है। लोगों को समझाने-बुझाने में उन्होंने पराक्रम किया। घोर विरोध और संघर्षपूर्ण वातावरण में भी वे अडिग रहे। आगम प्रमाण के साथ वे तत्त्वनिरूपण करते। श्रीमज्जयाचार्य आचार्य भिक्षु के भक्त थे। उन्होंने अनेकानेक ग्रथों का प्रणयन किया। उनका 'भ्रमविध्वंशनम' ग्रंथ तेरापंथ मान्यता की प्रस्तुति का सशक्त और मान्य ग्रंथ है। उनके द्वारा विरचित विशालकाय ग्रंथ 'भगवती की जोड़' का गुरुदेव तुलसी की सन्निधि में संपादन कर साध्वीप्रमुखाजी ने इसे सुगम्य बना दिया।'

आचार्यवर ने आगे कहा--'कंटालिया गांव के प्रति आज मैं आभार प्रकट करता हूं, जिसने दुनिया को एक दिव्य महापुरुष दिया। आज मैं इस (आचार्य) रूप में यहां पहली बार आया हूं, इसका मुझे संतोष है। कांठा क्षेत्र में कई ऐतिहासिक स्थल हैं। हम सिरियारी गए, कंटालिया आए हैं, बगड़ी जाना है। आचार्य भिक्षु जन्मस्थल रमणीय प्रतीत हो रहा है। यहां पठनीय सामग्री भी है। यहां की साध्वी चन्द्रिकाश्रीजी अच्छा विकास करें।' जन्म त्रिशताब्दी समारोह में यहां के लोगों द्वारा की गई चतुर्मास की प्रार्थना के संदर्भ में आचार्यवर ने कहा--'आप लोगों की प्रार्थना युक्तियुक्त है, उपयुक्त है। यदा-कदा आगे भी हमें रिमाइंड करते रहें।' कार्यक्रम का संचालन श्री राजेश मरलेचा ने किया।

कार्यक्रम के बाद आचार्यवर रावले के भीतर पधारे। ठाकुर परिवार ने आचार्यवर का स्वागत किया। प्रवास स्थल पर पधारने से पूर्व आचार्यवर उस उपाश्रय में पधारे, जहां आचार्य भिक्षु ने वि. सं. १८२४ तथा वि. सं. १८२८ में चतुर्मास किया। वि. सं. १९१३ की बसंत पंचमी को सिरियारी में निर्मित 'पंच ऋषि रो परवड़ो' (गुणकीर्तन ढाल) को जयाचार्य ने माघ शुक्ला चतुर्दशी को 'विघनहरण' के रूप में इसी उपाश्रय में स्थापित किया--

**fo?kugj.k uh Fkkiuk] fHkD[k uxj e>kjh gkA**
**ekg lnh pmnl i l fnu] dhèkh g"k vikjh gk Ï**

रात्रि में पारिवारिक सेवा व प्रेरणा के साथ लोगों ने विविध त्याग-प्रत्याख्यान स्वीकार किए। पूरे गांव में उत्सव का-सा माहौल था। गांव में लगभग पैंसठ घर खुले।

## e|kfy;k e ikou inki.k

**„Š ekpA** आज प्रातः विहार से पूर्व आचार्यप्रवर महामना आचार्य भिक्षु के जन्मस्थल पर पधारे। वहां कुछ क्षण तक ध्यान करने के पश्चात् पूज्यवर ने कंटालिया के श्रद्धालुओं के घरों का स्पर्शन किया। सरपंच चुन्नीलाल चौहान का घर भी इस क्रम में पूज्यचरणों के स्पर्श से पावन बना। ८.०६ किमी. का विहार कर आचार्यवर मुसालिया पधारे। पूज्यवर के पदार्पण से श्रद्धालुओं का उल्लास और उत्साह चरम पर था। चारों ओर प्रसन्नता का वातावरण दृष्टिगोचर हो रहा था। पूज्यप्रवर का प्रवास राजकीय माध्यमिक विद्यालय में हुआ।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में सुश्री हेमलता एवं सोनल पीपाड़ा ने सुमधुर गीत के द्वारा अपने आराध्य का स्वागत किया। श्री इन्द्रचन्द बोहरा, श्रीमती उषा बोहरा, श्री कान्तिलाल पीपाड़ा, उपासक श्री शांतिलाल बोहरा एवं श्रीमती सरोज पीपाड़ा एवं सरपंच श्रीमती सुनीतादेवी ने पूज्यवर के स्वागत में अपने श्रद्धासिक्त उद्गार व्यक्त किए। महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्रीजी एवं मंत्री मुनिश्री के प्रेरणादायी वक्तव्य हुए।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'अठारह पापों में तीसरा है--अदत्तादान। बिना अनुमति किसी दूसरे की वस्तु को चोरी की दृष्टि से ग्रहण करना अदत्तादान है। चोरी करनेवाला व्यक्ति स्वयं का अहित तो करता ही है, चुराई गई वस्तु के मालिक के मन को भी आहत करता है। जो स्वहित और परहित का आकांक्षी है, उसके लिए अदत्तादान अनाचरणीय है। चोरी कुगति का मार्ग है। व्यक्ति लोभाविष्ट होकर चोरी कर लेता है। उससे मुक्त रहने के लिए बचपन से ही ऐसे संस्कार दिए जाएं

कि व्यक्ति चौर्य कर्म में न जाए। वह पराई वस्तु को धूल के समान समझे। जीवन में यदि प्रामाणिकता की साधना सध जाए तो आत्मोत्थान का पथ प्रशस्त हो सकता है।'

पूज्यप्रवर ने प्रसंगवश कहा--'कल हम कंटालिया में थे। वहां की एक साध्वी ललितयशाजी भी हैं। वे खूब अच्छी साधना और अच्छा विकास करती रहें।' पूज्यवर ने मुसालिया के उपासक शान्तिलालजी और इन्द्रचन्दजी आदि श्रावकों का उल्लेख किया।

मुसालिया में छब्बीस तेरापंथी परिवारों सहित तीस जैन परिवार हैं। रात्रि में सभी परिवारों को पूज्यवर की उपासना का अवसर प्राप्त हुआ। लोगों ने इस दौरान विविध संकल्प स्वीकार किए। दूसरे दिन विहार से पूर्व सभी श्रद्धालुओं के घर पूज्यचरणों के स्पर्श से पावन हुए।

## vFk vkj dke ij èke dk vd'k jg

**„‹ ekpA** मुसालिया में गृहस्पर्शना के उपरान्त आचार्यवर ने सोजतरोड की ओर विहार करते हुए मार्गवर्ती महावीर राजकीय उच्चीकृत स्वास्थ्यकेन्द्र में पधारे। राजकीय प्राथमिक विद्यालय सेवानाड़ा के विद्यार्थियों को पूज्यवर से पावन पाथेय प्राप्त हुआ। आचार्यवर मार्गवर्ती धूंधला गांव में भी पधारे। यहां राजकीय माध्यमिक विद्यालय में आयोजित कार्यक्रम में सरपंच श्री पारसमल जांगीर और श्री केवलचन्द संचेती ने अपने आस्थासिक्त विचार व्यक्त किए। पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन उद्बोधन में जनता को अहिंसा यात्रा के सन्देश को आत्मसात् करने की प्रेरणा प्रदान की। पूज्यवर के पदार्पण से धुंधला के तीन तेरापंथी परिवारों सहित पूरे गांव में उत्साह और उल्लास का वातावरण रहा। आचार्यवर ने श्रद्धालुओं के घरों का स्पर्श किया।

६.०५ किमी. का विहार कर पूज्य आचार्यप्रवर सोजतरोड पधारे। पूज्यचरणों के स्पर्श से अपने गांव को पावन बना देखकर यहां का तेरापंथी समाज ही नहीं, अन्य जैन एवं जैनेतर समाज भी आह्लाद का अनुभव कर रहा था। सोजतरोड में आचार्यवर का प्रवास मनोहरलाल संपतराज आच्छा के आवास पर रहा। इस सौभाग्य को प्राप्त कर आच्छा परिवार कृतार्थता की अनुभूति कर रहा था।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में स्थानीय तेरापंथ महिला मंडल की बहनों ने स्वागत गीत का संगान किया। स्थानीय तेरापंथी सभा के अध्यक्ष श्री सुकनराज परमार, श्री विमल सोनी, श्री कुशल बम्बोली एवं श्री महावीर बम्बोली ने अपने आराध्य का अभिनंदन किया। मौलाना बक्सूर ने मुस्लिम समाज की ओर से आचार्यवर एवं अहिंसा यात्रा का सोजतरोड पदार्पण पर इस्तकबाल किया। श्री मोहनलाल पोकरणा ने स्थानकवासी समाज की ओर से पूज्यप्रवर का स्वागत किया। सोजतरोड से संबद्ध साध्वी दर्शनविभाजी ने आचार्यवर की अभ्यर्थना में अपने उद्गार व्यक्त किए। मंत्री मुनिश्री का प्रेरणादायी वक्तव्य हुआ।

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी ने पूज्यवर द्वारा जनकल्याण की दिशा में किए जा रहे महाश्रम के विषय में अपने उद्गार व्यक्त करते हुए जनता को पूज्यप्रवर की अमृतमयी वाणी को हृदयंगम करने की प्रेरणा दी।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'संस्कृत साहित्य में पुरुषार्थ चतुष्टयी--काम, अर्थ, धर्म और मोक्ष का वर्णन मिलता है। सामान्य आदमी के जीवन में अर्थ आवश्यक होता है। उसके बिना जीवन चलाना मुश्किल हो जाता है। जीवन की प्राथमिक आवश्यकताओं की संपूर्ति प्रायः अर्थाधारित होती है। यदि गृहस्थ हाथ फैलाता है तो यह उसके स्वाभिमान और गौरव के विपरीत बात मानी जाती है। गार्हस्थ्य में काम भी चलता है। विवाह के पीछे तीन उद्देश्य हो सकते हैं--

१. एक ऐसे जीवनसाथी की प्राप्ति, जो सुख-दुःख में साथ निभाए।

२. वंश परम्परा को आगे बढ़ाना।

३. कामेच्छा की संयमित रूप में पूर्ति।

जैन वाङ्मय में स्वदार संतोष की बात कही गई। अर्थात् काम पर धर्म का अंकुश रहे। अर्थ, काम और धर्म में संतुलन रहता है तो गार्हस्थ्य का रथ अच्छी तरह चल सकता है। अन्यथा अर्थ और काम अनर्थकारी हो सकते हैं। इच्छापरिमाण व्रत और स्वदार संतोष व्रत धर्म की दृष्टि से तो अच्छे हैं ही, सामाजिक व्यवस्था को सुन्दर बनाने में भी ये उपयोगी हो सकते हैं।' आचार्यवर ने आगे कहा--'तलाक की बात यदा-कदा कर्णगोचर होती है। इसका एक कारण असहिष्णुता हो सकता है। दाम्पत्य जीवन में सहिष्णुता आवश्यक होती है। उसके बिना कठिनाई हो सकती है। पचास-साठ वर्षों के दाम्पत्य जीवन में शान्ति रहे, टकराव न हो तो मैं इसे गृहस्थ जीवन की बड़ी साधना मानता हूं।'

पूज्यवर ने प्रसंगवश कहा--'मैं तो प्रवचन को भी सेवा का माध्यम मानता हूं। थोड़ा कष्ट हो तो भी प्रवचन करना चाहिए। प्रवचन सुनने वाला उतनी देर कितने-कितने पापों से बच जाता है। यदि प्रवचन न किया जाए तो अनेक बुराइयां जन जीवन में घर कर सकती हैं। प्रवचन सुनते-सुनते कई बार समस्या का समाधान भी मिल जाता है। इसलिए साधु को यथासंभव और यथावसर प्रवचन करना चाहिए।'

महाश्रमण मुनि मुदितकुमार के रूप में अपनी पृथक सिवांची-मालाणी यात्रा के पश्चात् १० जनवरी १९९१ को हुए गुरुदेव तुलसी के दर्शन की स्मृति करते हुए पूज्यप्रवर ने कहा--'परमपूज्य गुरुदेव तुलसी सोजतरोड में विराजमान थे। मैंने सिवांची-मालाणी की यात्रा कर गुरुदेव के दर्शन किए। कार्यक्रम में अपने प्रवचन को एक मोड़ देते हुए गुरुदेव ने मुझे खड़ा होने का निर्देश दिया और कहा--'मुनि मुदित एक यात्रा करके लौटा है। इस उपलक्ष्य में मैं इसे कुछ देना चाहता हूं। पर क्या दूं? महाश्रमण का पद तो इसे पहले ही दे दिया।' फिर युवाचार्य महाप्रज्ञजी की ओर उन्मुख होकर कहा--'बोलो, महाप्रज्ञजी! इसे क्या दूं? आचार्यश्री के इस प्रश्न ने सबको चौंका दिया। किसी को कुछ ज्ञात नहीं था कि महाश्रमण मुदित को आज आचार्यश्री क्या देना चाहते हैं? सभी शान्त, स्तब्ध, मौन थे और एकटक कभी गुरुदेव की ओर देखते, कभी मेरी ओर। तभी गुरुदेव ने आर्षवाणी का उच्चारण करते हुए कहा--

**bfM< p lDdkj.k i;.k p]**
**p, fB;lik vf.kg t l fHkD[kA**

जो ऋद्धि, सत्कार और पूजा की स्पृहा को त्यागता है, जो स्थितात्मा है, जो अपनी शक्ति का गोपन नहीं करता, वह भिक्षु है।

मुझे एक सीख देते हुए गृरुदेव ने कहा--'यह तो मैंने कुछ नहीं दिया। लेकिन, आज कुछ देना अवश्य है।' गुरुदेव के इस कथन से लोगों की उत्सुकता और बढ़ गई। अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए गुरुदेव ने कहा--'स्वामीजी ने अपने प्रिय शिष्य भारीमालजी से कहा था--'यदि तुम्हारी कोई शिकायत आए तो तुम्हें प्रायश्चित्तस्वरूप एक तेला करना होगा।' मैं तेले की बात तो नहीं करता, पर इतना अवश्य कहना चाहूंगा कि आज समाज में सुविधावाद अपने पांव पसारता जा रहा है। उसका प्रभाव साधु समाज पर भी आ रहा है। इस दृष्टि से मैं एक प्रयोग करना चाहता हूं--'मुनि मुदित की सुविधावादी के रूप में कोई शिकायत आए या मुझे अनुभूति हो जाए तो तीन दिन तक लगातार तीन-तीन घंटे खड़े रहकर ध्यान या स्वाध्याय करना होगा।' मैंने तत्काल बद्धांजलि होकर गुरुदेव के कृपापूर्ण वचनों को सहर्ष शिरोधार्य किया। गुरुदेव ने इस बात के माध्यम से मुझे मार्गदर्शन दिया कि सुविधावाद में नहीं जाना है।'

आचार्यप्रवर ने सोजतरोड से संबद्ध साध्वी दर्शनविभाजी को खूब अच्छा अध्ययन, अच्छी साधना और सेवा करने की प्रेरणा प्रदान की। पूज्यप्रवर ने सोजतरोड के श्री सुकनराज परमार, श्री विमल सोनी, श्री सोहनलाल कांकलिया आदि कार्यकर्ताओं का उल्लेख भी किया।

रात्रिकालीन कार्यक्रम के दौरान स्थानीय श्रद्धालुओं को पारिवारिक सेवा का अवसर प्राप्त हुआ। लोगों ने पूज्यवर से विविध संकल्प स्वीकार किए। श्री सुकनराज मूथा ने सपत्नीक आजीवन शीलव्रत स्वीकार किया।

## vkpk; fHk{k vfHkfu"Øe.k LFky cxMh e

**„, ekpA** परमाराध्य आचार्यप्रवर ने आज प्रातः विहार से पूर्व लगभग दो घंटे तक चार से अधिक किमी. की यात्रा कर सोजतरोड के सौ से अधिक घरों का स्पर्श किया। बरजूबाई लखारा नामक कर्मणा जैन महिला की बलवती प्रार्थना पर आचार्यवर लंबी दूरी तय कर उसके घर पधारे। गृहस्पर्शना के दौरान पूज्यप्रवर तेरापंथ भवन में पधारे और वहां 'प्रभो! यह तेरापंथ महान' गीत का आंशिक संगान किया।

लगभग नौ बजे पूज्य आचार्यवर ने सोजतरोड से बगड़ी के लिए प्रस्थान किया और कड़ी धूप में आठ किमी. का विहार कर बगड़ी पधारे। गांव में प्रवेश करने से पूर्व आचार्यवर जेतसिंहजी की छतरी के परिपार्श्व में पधारे। ज्ञातव्य है कि वि.सं. १८१७ में चैत्र शुक्ला नवमी के दिन आचार्य भिक्षु ने अन्य चार संतों के साथ स्थानक से अभिनिष्क्रमण करने के उपरान्त प्रथम रात्रि प्रवास श्मसान भूमि में बनी इस छतरी पर किया था। जो स्थान जीवन की अन्तिम मंजिल के रूप में जाना जाता है, उसे स्वामीजी ने अपना प्रथम प्रवास स्थल बनाया। आचार्य भिक्षु की उस निर्भीकता की स्मृति में कालान्तर में इस स्थान को 'अभयधाम' नाम से अभिहित किया गया। पूज्यवर ने छतरी के निकट खड़े होकर कुछ क्षण ध्यान किया, तत्पश्चात् प्रयाण गीत 'प्रभो! तुम्हारे पावन पथ पर' का संगान किया। आचार्यवर ने यहां एक पद्य की भी रचना की, जो इस प्रकार है--

**cxMh dh Nrjh l[kn] vHk;èkke dk LFkkuA**
**Lokehth dk è;ku dj] fd;k eèkj lxku Ï**

आचार्यप्रवर इसी परिसर में निर्मित हॉल में पधारे और वहां स्थापित शिलापट्ट पर विराजमान हुए। लोगों ने पूज्यवर से इस हॉल के नामकरण की प्रार्थना की। पूज्यवर ने नामकरण करने की नई विधा के रूप में पद्य रचना को माध्यम बनाते हुए कहा--

**f'kykiV ij cB dj] Lej ftuUn&ftuUnA**
**vHk;èkke e 'kkHkrk] ^fHk{k pruk dUn* Ï**

पूज्यप्रवर द्वारा संरचित पद्य के आधार पर इस हॉल का नाम 'भिक्षु चेतना केन्द्र' हो गया। परम श्रद्धेय आचार्यवर अभयधाम से बगड़ी गांव के भीतर स्थित तेरापंथ भवन में पधारे। पूज्यप्रवर का प्रवास यहीं हुआ।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में स्थानीय सभा के अध्यक्ष श्री दानमल सुराणा और सरपंच श्री मंगलाराम देवासी ने पूज्यवर के स्वागत में अपने श्रद्धासिक्त उद्गार व्यक्त किए। मंत्री मुनिश्री का प्रेरक उद्बोधन हुआ।

परमपूज्य आचार्यवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'साधु जिस श्रद्धा से घर को छोड़कर साधुत्व स्वीकार करता है, वह श्रद्धा हमेशा बनी रहे और उत्तरोत्तर प्रवर्द्धमान होती रहे। आज हम परम श्रद्धेय परमपूज्य महान् संत भिक्षु स्वामी से जुड़े हुए क्षेत्र बगड़ी में आए हैं। आचार्य भिक्षु के साथ यह क्षेत्र सांसारिक और आध्यात्मिक दोनों दृष्टियों से जुड़ा हुआ है। गृहस्थावस्था में उनका विवाह यहीं हुआ था। उन्होंने बगड़ी में रघुनाथजी महाराज के पास प्रथम बार दीक्षा स्वीकार की थी। ऐसा कहा जा सकता है कि महामना आचार्य भिक्षु ने बगड़ी में दो बार अभिनिष्क्रमण किया। प्रथम बार गृहस्थ जीवन से अभिनिष्क्रमण किया और दूसरी बार विशेष संकल्प के साथ स्थानक से अभिनिष्क्रमण भी यहीं से किया। आचार्य भिक्षु जैसे क्रान्तिकारी व्यक्तित्व विरल ही होते हैं। उनमें प्रबल पराक्रम और गहरी आस्था का भाव था। कितने-कितने कष्टों को उन्होंने गले लगाया। तेरापंथ शासन उनकी धर्मक्रान्ति का ही प्रतिफलन है। बगड़ी तेरापंथ की गर्भस्थली है। मुझे सात्विक आत्मतोष की अनुभूति हो रही है कि मैं आज तेरापंथ की गर्भस्थली और आचार्य

भिक्षु की धर्मक्रान्ति के उद्गम स्थान में आया हूं। हम आचार्य भिक्षु के प्रति प्रणति अर्पित करें। एक महान साधक भवितात्मा अणगार जैसे संत से संबद्ध क्षेत्र में आकर साधना के प्रति और अधिक जागरूक बनें। ऐसा करना सबके लिए श्रेयस्कर हो सकेगा।'

आज मध्याह्न में पूज्यवर की पावन सन्निधि में युवा सम्मेलन समायोजित हुआ। सम्मेलन में संभागी युवक-युवतियों ने अपनी विविध विषयक जिज्ञासाओं का समाधान प्राप्त किया। आचार्यवर से पूर्व मुनि जितेन्द्रकुमारजी का वक्तव्य हुआ। रात्रि में बगड़ी के कुछ श्रद्धालु परिवारों को पूज्यवर की उपासना का अवसर प्राप्त हुआ।

## ,frgkfld LFkkuk dk voyksdu

परमपूज्य आचार्यवर ने प्रातः आचार्य भिक्षु से जुड़े दो ऐतिहासिक स्थानों का अवलोकन किया। आचार्यवर कतिपय श्रद्धालुओं के घरों का स्पर्श करते हुए स्थानक के बाहर पधारे। लोगों ने बताया कि यह वही स्थानक है, जहां से संत भीखणजी ने अभिनिष्क्रमण किया था। स्थानक के द्वार पर ताला लगा था, इस कारण आचार्यवर उसके भीतर नहीं पधार सके, किन्तु बाहर खड़े-खड़े ही एक पद्य की रचना की, जो इस प्रकार है--

**fof"k"V fu"Bk l fd;k] LFkkud l fu"Øe.kA**
**Lokehth d pj.k e lfour egkJe.k Ï**

यहां से आचार्यप्रवर बगड़ी के बाहर नदी तट पर स्थित विशाल वटवृक्ष के नीचे पधारे। यह वही स्थान है, जहां भीखणजी (आचार्य भिक्षु) ने वि.सं. १८०८ में मार्गशीर्ष कृष्णा द्वादशी के दिन स्थानकवासी आचार्य रघुनाथजी से दीक्षा ग्रहण की थी। पूज्यप्रवर तेरापंथ समाज द्वारा नवनिर्मित चबूतरे पर आसीन हुए। श्री दानमल पोरवाल परिवार के सहयोग से निर्मित इस चबूतरे का लोकार्पण पूज्यवर से मंगलपाठ का श्रवण कर पाली जिलाप्रमुख श्री खुशवीरसिंह ने किया।

यहां आयोजित एक संक्षिप्त कार्यक्रम में तेरापंथी सभाध्यक्ष श्री दानमल सुराणा, श्री दानमल पोरवाल, श्री नरेन्द्र रांका, श्री निर्मल रांका और जिलाप्रमुख श्री खुशवीरसिंहजी ने अपने विचार व्यक्त किए। लोगों ने पूज्यप्रवर से आचार्य भिक्षु के इस दीक्षा स्थल पर दीक्षा समारोह समायोजित करने की प्रार्थना की। परमपूज्य आचार्यवर ने यहां भी एक पद्य की रचना की, जो इस प्रकार है--

**nh{kk LFky Jh fHk{k dk] cxMh cMyk LFkkuA**
**nhikunu dk dj] vfHkonu lEeku Ï**

दीक्षा स्थल के पार्श्ववर्ती मार्ग को आचार्यवर से मंगलपाठ सुनकर सरपंच श्री मंगलाराम देवासी ने 'आचार्य भिक्षु' मार्ग के रूप में लोकार्पित किया। दीक्षा स्थल से प्रस्थान कर कुछ घरों का स्पर्श करते हुए आचार्यवर पुनः प्रवास स्थल पर पधार गए।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में स्थानीय तेरापंथ महिला मंडल, श्रीमती ललिता धारीवाल, श्रीमती शोभा पोरवाल, श्रीमती राजकुमारी धारीवाल, श्री वी.डी.एस.गौतम सेठिया, श्री जयंती सुराणा, श्री महेन्द्र धारीवाल, श्री अशोक मूथा आदि ने अपने उद्गार व्यक्त किए। बालिका मेघा पोरवाल, प्रेक्षा पोरवाल, हर्षिता सुराणा और बालक हर्षित सेठिया ने बालस्वरों में अपनी प्रस्तुतियां दीं।

परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में जनता को पदार्थों के सीमाकरण और उनके प्रति अनासक्त रहने की प्रेरणा प्रदान की। आचार्यवर ने बगड़ी में दीक्षा समारोह आयोजित करने की प्रार्थना पर कहा--'लोगों ने दीक्षा समारोह की बात कही। यह बात उपयुक्त भी है कि आचार्य भिक्षु की प्रथम दीक्षास्थली पर दीक्षा समारोह आयोजित हो। यदि यह बात पहले कही जाती तो कल चैत्र शुक्ला नवमी के दिन ही मैं दीक्षा दे देता। दूसरी बात--दीक्षा समारोह में बगड़ी की ओर से योगदान हो तो ज्यादा अच्छी

बात होगी। फिर भी आज यहां मैं कहना चाहता हूं कि भविष्य में जब कभी बगड़ी आना होगा, मुहूर्त आदि की अनुकूलता होगी और आप लोग इस बात की स्मृति करा देंगे तो बगड़ी में दीक्षा समारोह करने का भाव है।'

आचार्यवर के प्रवचन के पश्चात् अणुव्रत विश्वभारती द्वारा तेरापंथ प्रवक्ता, समाजभूषण स्व.मोतीलाल रांका की स्मृति में प्रकाशित 'मरुधर का मोती' नामक ग्रंथ के लोकार्पण का कार्यक्रम रहा। इस दौरान ग्रंथ के संपादक श्री सोहनलाल गांधी, श्री महेन्द्र जैन, श्री महेन्द्र कर्णावट, श्री ए.के.मेहता आदि ने मोतीलालजी रांका के व्यक्तित्व पर अपने विचार व्यक्त किए। श्री निर्मल रांका ने अपने पिता की स्मृति में भावनाएं अभिव्यक्त कीं। अणुविभा की ओर से यह ग्रंथ पूज्यप्रवर के करकमलों में समर्पित किया गया। इस अवसर पर महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने कहा--'आचार्य भिक्षु अभिनिष्क्रमण स्थल बगड़ी में उस व्यक्तित्व की चर्चा हो रही है, जिसने सर्वप्रथम आचार्य भिक्षु अभिनिष्क्रमण समारोह आयोजित करने की परिकल्पना की। मोतीलालजी रांका एक प्रबुद्ध व्यक्ति थे। उनका तत्त्वज्ञान विशिष्ट था। अपने कर्तृत्व से उन्होंने समाज की सेवा की। अणुव्रत को आगे बढ़ाने में वे जी जान से जुटे रहे। उनका आस्थाभाव, ज्ञान और व्यक्तित्व विशिष्ट था। गुरुदेव तुलसी ने उन्हें 'तेरापंथ प्रवक्ता' और तेरापंथ समाज ने उन्हें 'समाजभूषण' अलंकरण से अलंकृत किया। वे अनेक दृष्टियों से समाज के लिए उपयोगी व्यक्ति थे। ऐसे व्यक्तित्वों की आज भी आवश्यकता है।'

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने इस प्रसंग में कहा--'मोतीलालजी रांका के संदर्भ में 'मरुधर का मोती' ग्रंथ भेंट किया गया। वे अपने आप में विशिष्ट व्यक्ति थे। अणुव्रत और तेरापंथ से वे गहरे जुड़े हुए थे। 'तेरापंथ प्रवक्ता' अलंकरण प्राप्त विरल व्यक्तियों में वे एक थे। समाजभूषण अलंकरण भी उनके व्यक्तित्व की विशिष्टता का द्योतक है। उनके गांव में उनका स्मृति ग्रंथ लोकार्पित हुआ है। उनके पीछे उनके सुपुत्रों ने अच्छा कार्य संभाला है। निर्मलजी तो अणुव्रत महासमिति के अध्यक्ष भी रह चुके हैं। आगे भी पवित्र कार्य करते रहें।' पूज्यवर ने बगड़ी के अन्य सुश्रावक स्व.मोतीलाल धारीवाल का उल्लेख करते हुए उनके सुपुत्रों को धार्मिक सक्रियता बनाए रखने की प्रेरणा प्रदान की।

कार्यक्रम में श्रीमती माला कातरेला ने स्वयं द्वारा तमिल भाषा में अनूदित पूज्यवर की कृति 'क्या कहता है जैन वाङ्मय' आचार्यवर को समर्पित की। पूज्यप्रवर ने श्रीमती कातरेला के श्रम को श्लाघनीय बताते हुए उन्हें भविष्य में भी पवित्र कार्य करने की प्रेरणा प्रदान की।

बगड़ी में जैन साधुओं के उपयोग में आने वाले पात्रों का निर्माण कार्य वर्षों से होता आ रहा है। आज मध्याह्न में पात्र निर्माता मुस्लिम बन्धुओं ने पूज्यवर के दर्शन किए। आज मध्याह्न में अभयधाम परिसर में आगम मनीषी मुनि महेन्द्रकुमारजी के उपपात में भिक्षु विचार-दर्शन विषयक संगोष्ठी समायोजित हुई। संभागियों ने निर्धारित विषय पर अपने विचार व्यक्त किए।

## Lokehth dk vudj.k % vHk;èkke e jkf=kokl

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर महामना आचार्य भिक्षु का अनुकरण करते हुए आज सायं सूर्यास्त के आसपास रात्रि प्रवास हेतु अभयधाम (जेतसिंहजी की छतरी) परिसर में पधारे। रात्रि में आयोजित कार्यक्रम में बगड़ी के अवशिष्ट श्रद्धालु परिवारों को पूज्यवर की उपासना का अवसर प्राप्त हुआ। लोगों ने विविध संकल्प स्वीकार किए। पारिवारिक सेवा के उपरान्त धम्मजागरणा का आंशिक उपक्रम रहा। पूज्य आचार्यवर ने स्वरचित गीत 'तेरापंथ अधिराज भिक्षुस्वामी पधारो' और 'भिक्षु बाबा! लो हमारी वंदना' का संगान किया। कार्यक्रम में मुनिवृन्द और अन्य संगायकों ने भी महामना आचार्य भिक्षु के प्रति भावांजलियां अर्पित कीं।

## xgLi'kuk dl lnHk e uhfr fuèkkj.k

परम पावन आचार्यवर ने २३ मार्च २०१२ को सिरियारी में अपने द्वारा की जा रही गृहस्पर्शना के

Postal Reg. No. DL (C)-01/1243/12-14 Fri.-Sat.
L.No.-U (C) 200/2012-2014
Licence to Post without Pre-payment
Regd. No. 61758/95 Office of Posting N.D.P.S.O.

विषय में नीति का निर्धारण करते हुए कहा--'घरों के स्पर्श के संदर्भ में मैंने परमपूज्य गुरुदेव महाप्रज्ञजी के इंगित को ध्यान में लिया और चिंतनपूर्वक समय की एक व्यवस्था बनाई है, वह इस प्रकार है--दिन में सवा बारह बजे से सूर्यास्त तक यथासंभव घरों का स्पर्श नहीं करूंगा। यह निर्णय अनिश्चितकाल के लिए रहेगा।'

## vkn'k lkfgR; l?k dk HkV

३१००/- प्रिय दीपेश गुगलिया की भावभीनी स्मृति में दादाश्री भेरूलालजी, दादी श्रीमती मांगीदेवी, पिताश्री रमेशजी, माता श्रीमती सुशीलादेवी, चाचा भीखमचन्द एवं भाई विरल गुगलिया, मोखुन्दा (मेवाड़) अहमदाबाद द्वारा प्रदत्त।

२१००/- श्री सोहनलालजी बाफना (राशमी) एवं स्व.भंवरलालजी बाफना (अहमदाबाद) को 'श्रद्धानिष्ठ श्रावक' संबोधन प्राप्त होने के उपलक्ष्य में श्रीमती शान्तादेवी, नेमीचन्द-भावनादेवी, मंगलकुमार-संगीतादेवी, मुदितकुमार, तेजस, नेहल बाफना, राशमी (राजस्थान) द्वारा प्रदत्त।

२१००/- श्रीमती आशादेवी (धर्मपत्नी-स्व. जेठमलजी बैद, गंगाशहर) को पूज्यप्रवर द्वारा 'श्रद्धा की प्रतिमूर्ति' संबोधन प्राप्त होने के उपलक्ष्य में उनके भ्राता कमलकिशोर बिमलकुमार लोढ़ा, चासबोकारो-जयपुर-गंगाशहर द्वारा प्रदत्त।

२१००/- सौ. मिलन (सुपौत्री-शंकरलालजी राठौड़, सुपुत्री श्री भंवरलाल राठौड़ एवं सौ. शीतल (सुपौत्री श्री शंकरलालजी राठौड़, सुपुत्री श्री मन्नालाल राठौड़, अणुव्रत वाटिका, रावलियाकलां-सूरत) के शुभ विवाहोपलक्ष्य में श्रीमती सोहनदेवी, नानालाल, मदनलाल, कैलाश, प्रकाश, जगत, मोहित, हर्ष, केवल, गोटू, शनि, रवि राठौड़ द्वारा प्रदत्त।

२१००/- स्व. श्री चांदमलजी मादरेचा (केलवा-डोंबीवली) की पुण्यस्मृति में उनकी धर्मपत्नी श्रीमती शकुन्तलादेवी, सुपुत्र व पुत्रवधू विनोद-सुषमा, अमृत-भावना, सुपौत्र नमन, अर्हम, जैनिथ मादरेचा द्वारा प्रदत्त।

२१००/- चि. प्रतीक सोनी (सुपुत्र-श्री चन्द्रेशजी सोनी, कांकरोली) के सी.ए.परीक्षा उत्तीर्ण करने के उपलक्ष्य में श्री गणपतलाल, पीयूषकुमार, मन, पारसदेवी, नीतू बोरदिया, भीलवाड़ा (राज.), डीसा (गुजरात) द्वारा प्रदत्त।

## lkèoh verJhth lekfèkej.k dk lEikn

विराटनगर (नेपाल) में अनशन में दीक्षित साध्वी अमृतश्रीजी अनशन के तीसवें दिन २६ मार्च २०१२ को समाधिमरण को प्राप्त हो गईं।

□ विज्ञप्ति के जिन वार्षिक सदस्यों का शुल्क समाप्त हो चुका है, वे शुल्क का नवीनीकरण शीघ्र करवा लें। अक्षयतृतीया के अवसर पर केन्द्र की उपासना में बालोतरा आने वाले लोग हमारे शिविर कार्यालय में शुल्क जमा करा सकते हैं। शुल्क हमारे दिल्ली कार्यालय को भी प्रेषित किया जा सकता है और अपने यहां आदर्श साहित्य संघ के एकाउंट नं.०१३३०००१००३६८३५६ (पीएनबी) में भी जमा करा सकते हैं।

**d'koilkn pronh] icU/kd&vkn'k lkfgR; l?k] }kjk&tu 'orkEcj rjkiFkh lHkk]**
**ik- ckykrjk&…†† ,„„] ft- ckMej ¼jktLFkku½ Qku % 09680055381] 09352404641**
fnYyh dk;ky; dk Qku 011&23234641 Email : adarshsahityasangh@yahoo.com
**idk'ku fnukd % 7&4&2012**

●

vkn'k lkfgR; l?k] 210] nhun;ky mikè;k; ekx] ub fnYyh&110002 d fy, cPNjkt dBkfr;k VLVh }kjk idkf'kr rFkk iou fiVl] uohu 'kkgnjk] fnYyh&110032 l efnrA lEiknd % **d'koilkn pronhA**